संपादकीय

जांच से ही आस

कोर्ट के हस्तक्षेप से जगी उम्मीदें

भले ही? छुट्टी पर भेजे गये सीबीआई निदेशक आलोक वर्मा को शीर्ष अदालत से फौरी तौर पर राहत नहीं मिली है मगर सतर्कता आयोग को दो सप्ताह में जांच रिपोर्ट सौंपने के निर्देश से उम्मीद जरूर जगी है। नि:संदेह इसके दो शीर्ष अधिकारियों की लड़ाई से सीबीआई की साख पर जो बट्टा लगा है, उसकी कालिख कुछ कम जरूर होगी। मुख्य न्यायाधीश रंजन गोगोई, जस्टिस एस. के. कौल और जस्टिस के. एम. जोसेफ की पीठ ने मामले की सुनवाई करते हुए सीवीसी को जांच रिपोर्ट दो सप्ताह में देने को कहा है। जांच सेवानिवृत्त न्यायाधीश ए. के. पटनायक करेंगे। जाहिर है कि दोनों अधिकारियों ने एक-दूसरे पर भ्रष्टाचार के आरोप लगाये थे तो तीसरे पक्ष द्वारा जांच की जरूरत?थी। कोर्ट ने केंद्र सरकार को भी नोटिस भेजा है कि नागेश्वर राव अंतरिम निदेशक बने रहेंगे मगर कोई भी नीतिगत फैसला नहीं लेंगे। केंद्र सरकार ने देश की बड़ी जांच एजेंसी के शीर्ष अधिकारियों के बीच टकराव टालने के लिये बड़ा कदम उठाया था मगर विवाद सुलझने के बजाय और जटिल हो गया है। न्यायिक दखल के बाद विवाद के पटाक्षेप की उम्मीद जगी है।

बहरहाल, अपनी कार्यशैली के चलते पहले ही विवादों में रहने वाली सीबीआई की साख को जो क्षति पहुंची है, उसकी भरपाई आसान नहीं है। ऐसा भी नहीं है कि देश की सबसे बड़ी जांच एजेंसी काम के मामले में बिल्कुल नकारा साबित हुई है। ?असल में चुनौती राजनीतिक हस्तक्षेप की है। आम धारणा है कि सीबीआई केंद्र सरकार के इशारे पर सत्तारूढ़ दल के नेताओं को बचाने और विपक्षी नेताओं को डराने का काम करती है। यही वजह है कि कुछ वर्ष पूर्व शीर्ष अदालत ने सीबीआई को पालतू तोता कहा था। इसके बाद इसे स्वायत्त बनाने और निदेशक की चयन प्र िया को पारदर्शी बनाने की कवायद की गई थी। निदेशक का कार्यकाल निश्चित किया गया था। अन्य शीर्ष पदों के लिये भी यही प्र िया अपनाने की जरूरत है। मौजूदा हालात में इसकी विश्वसनीयता व प्रामाणिकता बनाये रखने के लिए लगातार सुधारों की जरूरत है ताकि यह संस्था केंद्र सरकार के किसी भी तरह के दबाव से मुक्त हो सके। यह दुर्भाग्यपूर्ण ही है कि पहले ही साख के संकट से जूझ रही केंद्रीय जांच एजेंसी की साख को हालिया शीर्ष अधिकारियों के विवाद ने बट्टा लगा दिया है। इसकी साख बचाने व केंद्र के दबाव से मुक्त बनाने की पहल होनी चाहिए। मामला पुलिस सुधारों से भी जुड़ा है।

एसबीआई क्रेडिट कार्ड के बिना ओटीपी से निकले पैसे? ऐसे बचें इस बैंकिंग फ्रॉड से

नई दिल्ली। जरा सोचिए, अगर आपका क्रेडिट कार्ड आपकी जेब में पड़ा हो और आपके बिना यूज किए घर पर हजारों रुपये का बिल आ जाए तो आपको कितना बड़ा झटका लगेगा. आजकल फ्रॉड के ऐसे कई केस सामने आ रहे हैं. राजकोट के विनोद गिरी गोसाई के एसबीआई क्रेडिट कार्ड से ऑनलाइन फ्रॉड ट्रांजेक्शन हुआ. ओटीपी (वन टाइम पासवर्ड) नंबर के बिना ही अकाउंट से पैसे निकाले गए. इसके बाद उन्होंने तुरंत एसबीआई क्रेडिट कार्ड के दफ्तर पर शिकायत की. लेकिन उनकी शिकायत पर कोई सुनवाई नहीं हुई. इसके बाद उन्होंने बिजनेस चैनल सीएनबीसी-आवाज़ के कंज्यूमर शो पहरेदार ग्राहक से मदद मांगी. पहरेदार की मदद से उनके पूरे वापस मिल गए.

ऐसे हुआ फ्रॉड- कुछ ही समय पहले विनोद गिरी गोसाई के क्रेडिट कार्ड से दो फर्जी ट्रांजैक्शन हुए. पहले 1387 रुपये निकाले गए. दूसरे में 30,724 रुपये

अकाउंट से निकाले गए. पहला ट्रांजैक्शन रात 8.18 बजे और दूसरा 8.20 पर हुआ. 24 अप्रैल 2018 को एसबीआई कार्ड्स में शिकायत की गई. लेकिन उनकी शिकायत पर कोई एक्शन नहीं हुआ.

एसबीआई क्रेडिट कार्ड के दफ्तर पर कई बार शिकायत की गई. बैंक की ओर से मैसेज आया और मैसेज में 1387 रुपये बैंक खाते में आने की बात थी. हालांकि, दूसरी राशि की कोई जानकारी नहीं दी. बैंक के हर प्लेटफॉर्म पर ई-मेल किया और पहरेदार को भी ई-मेल किया. पहरेदार ने मदद की और 14 अगस्त 2018 को उनके अकाउंट में 30,724 रुपये वापस आ गए.

कुछ सावधानियां हैं जिन्हें अपनाकर आप ठगी का शिकार होने से बच सकते हैं. क्रेडिट कार्ड का अगर समझदारी से इस्तेमाल किया जाए, तो इसके काफी फायदे हैं. इसलिए हम आपको बता रहे हैं कुछ ऐसी एहतियातों के बारे में जिससे आप सुरक्षित रह सकें.

>> किसी को भी अपने क्रेडिट कार्ड के दोनों तरफ की फोटो कॉपी न दें. ऑनलाइन ट्रांजैक्शन के लिए जरूरी कार्ड वेरिफिकेशन वैल्यू (सीवीवी) कार्ड के पीछे की ओर ही छपा होता है. लिहाजा क्रेडिट कार्ड नंबर के साथ कोई भी इसका गलत इस्तेमाल कर सकता है.

>> ऐसे ई-मेल लिंक्स पर कतई क्लिक ना करें जिस पर आपके अकाउंट डिटेल्स मांगे गए हों. ये ठगों के फिशिंग मेल हो सकते हैं. जबकि ज्यादातर जानी-मानी कंपनियां सीधे अपनी वेबसाइट पर जाने को कहती हैं.

>> क्रेडिट कार्ड से पेमेंट करते वक्त अच्छी तरह से ये जांच-परख लें कि वेबसाइट सिक्योर है या फिर नहीं. अगर आपको जरा भी संदेह होता है तो किसी एक्सपर्ट की मदद लें या बेवसाइट के बारे में इंटरनेट पर सर्च करें. फोन पर किसी को भी अपने अकाउंट डिटेल्स न दें, खासतौर पर टेलिमार्केटिंग कंपनियों को.

>> अगर आप अपने क्रेडिट या डेबिट कार्ड का स्टेटमेंट वक्त पर नहीं पाते हैं तो इसकी जानकारी बैंक को दें. साथ ही कार्ड अगर गुम हो जाता है तो इसे बिना देर किए कैंसिल करा दें.

>> पुराने बैंक स्टेटमेंट, क्रेडिट कार्ड एप्लिकेशन, बिल को छोटे टुकड़ों में फाड़कर फेंक दें. नहीं तो किसी के हाथ लग जाने पर आपके व्यक्तिगत जानकारी का गलत इस्तेमाल का खतरा होता है.

>> अगर इन सब एहतियात के बाद भी आप धोखाधड़ी के शिकार होते हैं तो इसकी जानकारी तुरंत बैंक को दें और आगे की कार्रवाई के लिए कहें.

दो साल में जीएसटी परिषद की 30 बैठकों में लिए गए 918 फैसले

नयी दिल्ली (आरएनएस)। वित्त मंत्री अरुण जेटली की अगुवाई वाली माल एवं सेवा कर (जीएसटी) परिषद की दो साल में 30 बैठकें हुई हैं जिनमें 918 फैसले लिए गए। वित्त मंत्रालय ने रविवार को यह जानकारी दी। जीएसटी परिषद की बैठकों में नई कर व्यवस्था से जुड़े कानूनी, नियम और कर दरों संबंधी निर्णय लिए गए हैं। जीएसटी परिषद के सदस्यों में राज्यों के वित्त मंत्री शामिल हैं। परिषद का गठन देश के पहले संघीय संस्थान के रूप में 15 सितंबर, 2016 को हुआ था। मंत्रालय ने बयान में कहा, ''आज की तारीख तक परिषद ने जीएसटी कानून, नियम, दरों, मुआवजे, कराधान सीमा आदि से संबंधित 918 फैसले लिए हैं।

इनमें से 96 प्रतिशत से अधिक फैसलों को केंद्र सरकार द्वारा जारी 294 अधिसूचनाओं के जरिये पहले ही क्रियान्वित किया जा चुका है।'' शेष फैसले क्रियान्वयन के विभिन्न स्तरों पर हैं। इतनी ही संख्या में राज्यों की ओर से भी इससे जुड़ी अधिसूचनाएं जारी की जा चुकी हैं।''

एशियाई चैंपियंस ट्रॉफी : हॉकी फाइनल में भारत और पाकिस्तान बने संयुक्त विजेता

नई दिल्ली। मौजूदा विजेता भारत और पाकिस्तान के बीच एशियाई चैम्पियंस ट्रॉफी का फाइनल मुकाबला भारी बारिश की भेंट चढ़ गया और दोनों टीमों को संयुक्त विजेता घोषित किया गया. रविवार रात यहां फाइनल मुकाबले से पहले तेज बारिश शुरू हो गई और निर्धारित समय के बाद भी बारिश नहीं रुकी तो दोनों टीमों को संयुक्त विजेता घोषित कर दिया गया. इसके साथ ही भारतीय हॉकी टीम अपना खिताब बचाने में कामयाब रही.

भारत और पाकिस्तान दोनों टीमों ने अब तीन-तीन बार इस टूर्नामेंट में खिताबी जीत हासिल कर ली है. 2016 में भारत ने फाइनल में पाकिस्तान को 3-2 से हराकर खिताब हासिल किया था.

इससे पहले भारतीय टीम 2011 में भी फाइनल में पाकिस्तान से भिड़ चुका है. इसमें भी भारतीय टीम ने बाजी मारी थी.

सावधान : निवेशक कम समय में भारी रिटर्न के जाल में फंसने से बचें

नई दिल्ली। वित्तीय बाजार में ऐसी सैकड़ों निवेश फर्म मौजूद हैं, जो थोड़े समय के निवेश में भारी रिटर्न का ऑफर देती हैं और लोग इसके जाल में फंस जाते हैं। जबकि रिजर्व बैंक और तमाम वित्तीय संस्थाएं ऐसे दावों पर लोगों को आगाह करती रहती हैं। विशेषज्ञों का कहना है कि पारंपरिक या बाजार से जुड़ी किसी भी योजना में असामान्य रिटर्न में धोखाधड़ी हो सकती है, ऐसे में सावधानी बरतना जरूरी है।

एक बार इनवेस्टमेंट के बाद पैसा निकालना मुश्किल संदिग्ध कंपनियां पहले पंजीकरण के नाम पर रकम वसूलती है। जब एक बार व्यक्ति निवेश कर देता है, तो और पैसा लगाने का दबाव डाला जाता है। अतिरिक्त निवेश नहीं करने पर पहले जमा की गई राशि भी डूबने का भय दिखाया जाता है। इस प्रकार निवेशक कंपनी के चक्रव्यूह में फंस जाता है।

निवेशकों को करोड़ों का चूना भी लगा

ऐसा ही एक मामला इंदौर में सामने आया, जिसमें आरोपी कंपनी ने डेढ़ महीने में पैसा ढाई गुना करने के नाम पर करोड़ों रुपये जमा कर लिए। इसने देश भर के 56 से ज्यादा निवेशकों को सवा तीन करोड़ रुपये का चूना लगाया। इसकी धोखाधड़ी के शिकार लोग गुजरात, बिहार, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, हरियाणा दिल्ली, झारखंड पंजाब और गोवा जैसे तमाम राज्यों के लोग हुए।

सस्ते किराये वाली लेट नाइट फ्लाइट्स शुरू कर रहा है एयर इंडिया

नई दिल्ली (आरएनएस)। यदि आप हवाई सफर की अधिक कीमत को लेकर परेशान हैं तो एयर इंडिया का यह फैसला राहत का सबब हो सकता है। सरकारी एयरलाइन कंपनी ने लेट नाइट फ्लाइट्स शुरू करने का फैसला लिया है। इन्हें रेड आई फ्लाइट्स भी कहा जाता है। इन फ्लाइट्स को घरेलू रूटों पर शुरू किए जाने की योजना है। दिल्ली-गोवा-दिल्ली, दिल्ली-कोयम्बटूर-दिल्ली, बेंगलुरू-अहमदाबाद-बेंगलुरू रूट पर 30 नवंबर से नियमित लेट नाइट फ्लाइट्स की शुरुआत की जा सकती है। एयरलाइन ने एक बयान में कहा, एयर इंडिया 883 फ्लाइट 10 बजे रात में दिल्ली से रवाना होगी और 12:35 एएम पर गोवा पहुंचेगी। इसके बाद रिटर्न फ्लाइट एआई 884 1:15 पर टेकऑफ करेगी और सुबह 3:40 पर दिल्ली पहुंचेगी। एआई 547 राहत में 9:15 पर दिल्ली से रवाना होगी और 12:30 पर कोयम्बटूर में लैंडिंग करेगी।

धोनी वर्ल्ड कप में खेलेगा या नहीं, जानिए क्या सोचते हैं पूर्व कप्तान दिलीप वेंगसरकर

नई दिल्ली। भारत और वेस्टइंडीज के बीच पांच मैचों की सीरीज के पहले तीन मैचों में भारत के प्लेइंग इलेवन में दो विकेटकीपरों को जगह मिली। महेंद्र सिंह धोनी विकेटकीपर बल्लेबाज के तौर पर खेले, तो वहीं ऋषभ पंत बल्लेबाज के तौर खेलते हुए नजर आए। सीरीज के पहला मैच तो टीम इंडिया ने आसानी से जीता लेकिन बाकी दो मैचों में वेस्टइंडीज ने जबर्दस्त वापसी की। दूसरा वनडे टाई हुआ तो तीसरा वनडे वेस्टइंडीज ने जीत लिया। पूर्व कप्तान दिलीप वेंगसरकर का मानना है कि टीम इंडिया दो विकेटकीपरों के साथ नहीं खेल सकती। केदार जाधव चोट से उबर चुके हैं और आखिरी दो मैचों के लिए टीम इंडिया में शामिल किए गए हैं। जाधव की वापसी से टीम इंडिया को बेहतर बैलेंस मिलेगा। वेंगसरकर ने दो विकेटकीपरों को खिलाए जाने को लेकर कहा, 'टीम दो विकेटकीपरों के साथ नहीं खेल सकती है।

मंदिरों में क्यों बजाई जाती हैं घंटी, आइये जाने...

अगर हम भारत देश की बात करे तो इसमें कोई शक नहीं कि भारत के लोग ईश्वर में भरपूर आस्था रखते है. जी हां तभी तो यहाँ के लोग अपनी मन्नते पूरी करने के लिए भगवान् के द्वार पर जाते है. गौरतलब है कि लोग भगवान के प्रति अपनी आस्था दिखाने के लिए मंदिर में जाते है. अब जाहिर सी बात है कि हमारे भारत देश में इतने ज्यादा मंदिर है कि उनकी गिनती करना भी मुश्किल है. बरहलाल ऐसा कोई देश नहीं जहाँ आपको मंदिर देखने को न मिले. यानि अगर हम सीधे शब्दों में कहे तो मंदिर केवल भारत देश में ही नहीं बल्कि विदेशो में भी देखने को मिलते है. जी हां विदेशी लोग भी भगवान में यकीन तो जरूर रखते है.

वैसे आपने अक्सर देखा होगा कि मंदिर में

प्रवेश करते ही वहां बहुत सारी घंटियां लटकी होती है. मगर क्या आप जानते है कि मंदिर में लगी इन घंटियों का क्या मतलब होता है? अब इसमें तो कोई शक नहीं कि जब हम किसी भी भगवान् के मंदिर में जाते है, तो वहां अपनी श्रद्धा दिखाने के लिए घंटिया तो जरूर बजाते है, लेकिन बहुत कम लोग जानते है कि आखिर मंदिर में घंटिया क्यों लगाई जाती है और इसका क्या महत्व है. वैसे आपकी जानकारी के लिए बता दे कि हमारे हिन्दू धर्म में हर चीज का अपना ही एक अलग महत्व होता है. ऐसे में अगर मंदिर में घंटिया लगी होती है तो इसका भी कुछ न कुछ खास महत्व तो जरूर होगा.

बरहलाल अगर आपके मन में भी मंदिर में लगी घंटियों को लेकर कभी ऐसे सवाल आएं हो और आपको इसका जवाब न मिला हो, तो आज हम आपको इन सभी सवालों के जवाब जरूर देंगे. जी हां आज हम आपको बताएंगे कि आखिर मंदिर में घंटिया क्यों लगाई जाती है और इसका क्या महत्व होता है. गौरतलब है कि जहाँ एक तरफ इसके कुछ आध्यात्मिक कारण है, तो वही दूसरी तरफ इसके कुछ वैज्ञानिक कारण भी है.

दिवाली स्पेशल : मेहमानों को खिलाए 'मठरी', जानें इसे बनाने का तरीका

पूरे देश में दिवाली त्योहार की तैयारियां शुरू हो चुकी है, पूरा परिवार इस त्योहार को साथ मिलकर मनाता हैं। इस त्योहार पर घर पर मेहमानों का आना-जाना लगा रहता है और उनको अल्पाहार कराया जाता है। आज हम आपके लिए इस अल्पाहारमें शामिल होने वाली 'मठरी' को बनाने की द्रष्द्धश्द्ध लेकर आए हैं। तो आइये जानते है इस द्रष्द्धश्द्ध के बारे में।

आवश्यक सामग्री :-
100 ग्राम मैदा
100 मिली लीटर दूध
50 ग्राम घी
तलने के लिए घी

थोड़ा-सा मैदा अलग से मठरी के लिए इमेज परिणाम

बनाने की विधि :-
सबसे पहले बड़े कटोरे में मैदा और घी डालकर अच्छी तरह मिला लें। इस बात का ध्यान रखें कि मैदे में गांठ न पड़े।
अब इसमें धीरे-धीरे दूध डालते हुए मुलायम आटा गूंदें और कुछ देर के लिए अलग रख दें।
तय समय के बाद आटे से छोटी-छोटी लोई बनाएं। पलथन लगाकर गोलाकार देते हुए थोड़ा-सा दबाएं।
मठरी में कांटे वाले चम्मच से बीच-बीच में छेद कर दें।
मीडियम आंच में एक पैन में घी गर्म करने के लिए रखें।
घी के गर्म होने के बाद इसमें 5-6 मठरी डालकर तल लें।
तैयार है फीकी मठरी। आप इन्हें कंटेनर में स्टोर कर रख सकते हैं।

शब्द सामर्थ्य-73

बाएं से दाएं
1. अभिमान, घमंड, अनुमान 4. बादल, मेघ, जलद (सं) 6. अधिकार वाला, अधिकारी 8. गति, सामंजस्य, समा जाना 10. कारावास, जेल 11. जोर, शक्ति, जान, सांस 12. राजाओं के रहने का भवन 15. मालामाल, अमीर, धनवान 18. नाव खेने का यंत्र 20. 'खन' ध्वनि उत्पन्न होना, पायल आदि का शब्द करना 21. मार डाला हुआ, घायल किया हुआ 22. हमेशा, आवाज 23. आग की लपट, ज्वाला 24. झगड़ा, तकरार 25. हीरा।

ऊपर से नीचे
1. दोषी, अपराधी 3. ताश में नौ अंक वाला पत्ता 4. झंडा, पताका 5. गहरा कीचड़, पंक 7. बूंद, अंश 9. मृत्यु के देवता 13. संसार, दुनिया, जग 14. हुजूर, जनाब, सम्मान सूचक एक शब्द (उ.) 16. सच्चा, धर्मनिष्ठ, ईमानवाला 17. अनूठा, बांका, अनुपम, छैला 18. आश्रय, शरण 19. साधुवाद, प्रशंसा 20. पटवारी की ऐसी बही जिसमें खेत संबंधी अनेक बातें लिखी जाती है, एक प्रकार का दानेदार संक्रामक रोग 23. गम, मातम, दुख।

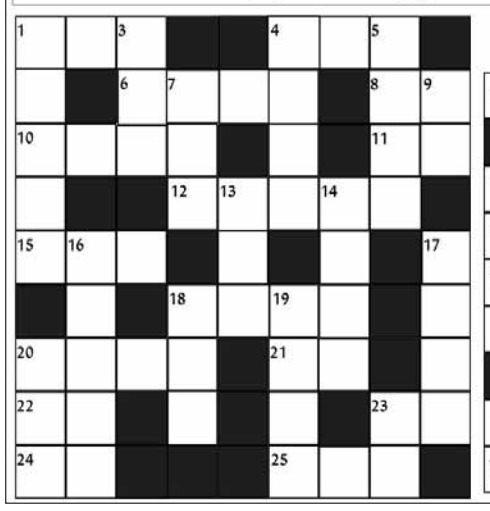

शब्द सामर्थ्य क्रमांक 72 का हल

स्मृ	ति	■	पा	व	क	■	बे	ल
■	र	ज	नी	च	र	■	■	ट्टू
मु	स्का	न	■	न	म	की	न	■
सा	र	■	स	■	■	ट	ख	ना
फि	■	अ	जा	य	ब	■	रा	जा
र	च	ना	■	था	ल	■	■	य
■	■	धि	■	र्थ	■	स	मा	ज
उ	प	कृ	त	■	आ	वा	ज	■
ल्लू	■	त	■	■	ब	ल	रा	म

सू-दोकू-73

	9		1	6		2		7
3								
		6					9	
7			5		1		3	
	8			9		6		2
		4					7	
	3				2	9		6
6		7	3					4
	4			1		7	8	

नियम
1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गों का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक भर सकते है।
3. बाएं से दाएं और ऊपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

सू-दोकू क्र.72 का हल

2	6	3	9	8	7	1	5	4
8	5	1	3	2	4	6	7	9
9	4	7	1	5	6	8	2	3
3	9	8	6	7	1	5	4	2
6	1	2	5	4	3	9	8	7
5	7	4	8	9	2	3	1	6
1	2	6	7	3	5	4	9	8
4	8	5	2	6	9	7	3	1
7	3	9	4	1	8	2	6	5

आज का राशिफल

मेष: एकाग्रता कम रहने के कारण मन से आप दुखी रहेंगे। निवेश करने के बारे में सोच रहे लोग थोड़ा सोच-समझकर कोई फैसला लें। पारिवारिक वातावरण में सुधार होगा। धार्मिक कार्यों में भाग लेंगे।

वृषभ: नए मित्र बनेंगे। संतान की प्रगति से मन पुलकित हो जाएगा। पर्यटन या प्रवास का योग हैं। स्वजनों पर खर्च होगा। उनके साथ मतभेद भी रहेंगे। धार्मिक कार्यों के पीछे खर्च होगा।

मिथुन: व्यापारी-वर्ग के लिए आज का दिन शुभ है। व्यापार में वृद्धि होने के साथ-साथ सफलता और उगाही का धन भी प्राप्त होगा। पिता तथा बड़े-बूढ़ों से लाभ होगा। लक्ष्मीजी की कृपादृष्टि रहेगी। मित्रों से लाभ होगा। कहीं घूमने भी जा सकते हैं।

कर्क: दिन का प्रारंभ कुछ अशांति के साथ हो सकता है। पेट के कारण परेशान हो सकते हैं। संतान के विषय में भी चिंता अधिक रहेगी। साथ ही मन में प्रसन्नता और शरीर में स्फूर्ति का अनुभव होगा। मान-प्रतिष्ठा और उच्च पद प्राप्त होगा।

सिंह: आज का दिन आपके लिए मध्यम फलदायी रहेगा। अनैतिक कार्यों से दूर रहने की सलाह गणेशजी देते हैं। शारीरिक और मानसिक श्रम अधिक रहेगा। आकस्मिक धन लाभ होगा। संतान के विषय में चिंता हो सकती है। वाद-विवाद टालिएगा।

कन्या: कलाक्षेत्र के प्रदर्शन से एवं सामाजिक दृष्टि से आपको यश-कीर्ति और मान-सम्मान प्राप्त होगा। मनोरंजन के क्षेत्र में आपका दिन आनंदपूर्ण बीतेगा। व्यापारियों को उगाही का धन मिलने की संभावना है।

तुला: आज का दिन आपके लिए शुभ फलदायी है। किसी भी कार्य को आप दृढ मनोबल से करेंगे। मन को शांत रखें। वाणी में संयम रखें। कलाकारों के लिए आज का दिन शुभ है।

वृश्चिक: विद्यार्थियों के लिए भी समय अनुकूल है। शेयर-सट्टे में लाभ होगा। मनोबल दृढ़ और आत्मविश्वास से भरपूर होगा। स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। प्रतिस्पर्द्धियों के समक्ष विजय प्राप्त होगी।

धनु: आज आपकी माता का स्वास्थ्य प्रभावित होने से आप परेशान होंगे। इससे आपका भी स्वास्थ्य बिगड़ सकता है। धन और कीर्ति की हानि होगी।

मकर: जीवनसाथी के साथ व्यवहार अधिक मधुरतापूर्ण होगा। मित्रों के साथ पर्यटन पर जाने का मन बना सकते हैं। मान-सम्मान में वृद्धि होगी। प्रतिस्पर्द्धियों पर विजय प्राप्त होगी।

कुंभ: खर्च पर आपको संयम रखना होगा। साथ-साथ क्रोध और जीभ पर भी संयम रखना होगा। किसी के साथ वाद-विवाद में उग्रता न हो जाए और साथ-साथ नकारात्मक विचार भी मन से दूर हो जाए।

मीन: आज आपके घर में धार्मिक कार्य होंगे। परिवार में आनंदमय वातावरण रहेगा। कार्य सफलता मिलेगी। शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य का ध्यान रखें।